

प्रसिद्ध  
सचित्र कहानियां  
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

## विक्रमादित्य का सिंहासन

बेताल ने बहुत कोशिश की, पर अंत में हार मानकर उसे विक्रमादित्य के साथ तांत्रिक के पास जाना ही पड़ा। बेताल और विक्रमादित्य की कहानियां बहुत प्रसिद्ध हुयीं। धैर्य, दृढ़ संकल्प और विवेक का वे इतिहास में ज्वलंत उदाहरण बनीं।

कई वर्ष बाद उज्जैन में भोज नामक राजा का राज हुआ। उन्हें राजा विक्रमादित्य का पता कैसे चला इसकी मनोरंजक कहानी कुछ इस प्रकार है-

एक बार राजा भोज, अपने आदमियों के साथ जंगल में शिकार करने गए। कुछ जंगली जानवर पास के गांवों में उत्पात मचा रहे थे। राजा भोज उन्हें मारकर वापिस शांति बहाल करना चाहते थे।

सुबह से जंगल में जानवरों का पीछा करते-करते सभी थक गए थे। सूरज भी सिर पर था। सब ने आराम करने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढनी शुरू किया। ढूंढते-ढूंढते वे लोग एक बड़े खेत के पास पहुंचे जिसमें मक्के बोए हुए थे। राजा को मक्के देखने में बहुत स्वादिष्ट लगे। खेत के मालिक को ढूंढना शुरू किया गया। वह खेत के बीच में मिट्टी के टीले पर बैठा था।

वे उसके पास गए। राजा तथा उसके लोगों को देखकर उसने उठकर अभिवादन किया और बोला, “महाराज! अहो भाग्य, जो आप लोग यहां पधारे हैं। मैं श्रवण भट्ट हूं और इस खेत का मालिक हूं। कृपया आप लोग यहां आराम करें और मक्के का मजा लें।”

राजा तथा उसके लोग बहुत प्रसन्न हुए। उन लोगों ने वहीं डेरा डाल दिया और मीठे मक्के का मजा लेने लगे।

श्रवण भट्ट जब टीले से उतरा और राजा तथा उसके आदमियों को मक्का खाते देखा तो नाराज हो गया। वह राजा से जाकर बोला, “महाराज, मैं बहुत गरीब आदमी हूं। यह मक्का मेरी जीविका है। यदि आपके आदमी इसे खा लेंगे, तो मैं अपने परिवार को क्या खिलाऊंगा?” राजा ने श्रवण भट्ट को कुछ पैसे दिए, जिसे लेकर उसने राजा का धन्यवाद देकर, वह वापिस टीले पर जाकर बैठ गया।

टीले पर बैठने के बाद उसने फिर कहा, “महाराज! इस धरती पर आपका शासन है। फिर यह सारा खेत और सारी फसल तो मुझसे अधिक आपकी हुई। आपने मुझे इसके पैसे क्यों दिये। ये तो सब आपके ही हैं। मैं यह पैसा नहीं ले सकता...” यह कहकर उसने राजा को पैसे लौटा दिए।

श्रवण भट्ट की ऐसी बातें सुनकर राजा घबरा गया। इस टीले पर जरूर कुछ गड़बड़ है... ऐसा सोचते हुए उसने काफी धन देकर श्रवण भट्ट से वह खेत खरीद लिया। खेत लेने के बाद राजा ने टीले को खुदवाना शुरू किया। खुदाई में टीले के नीचे से एक सोने का सिंहासन मिला, जिस पर कीमती पत्थर जड़े हुए थे। साथ ही बत्तीस विचित्र गुड़िया भी मिली। इन्हें देखकर सबके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। राजा को ये चीजें इतनी पसंद आयीं कि वे उन्हें अपने महल में ले जाना चाहते थे।

राजा के आदेशानुसार कई लोग मिलकर भी उस सिंहासन को वहां से हिला नहीं पाए। और लोग बुलाए गए फिर भी सिंहासन नहीं हिला। तब किसी सलाहकार ने सलाह दी, “महाराजा, संभव है, यह सिंहासन किसी बड़े राजा का हो। इसे हिलाने से पहले इसकी पूजा करानी चाहिए।” महाराजा को बात पसंद आ गई। कुछ ब्राह्मण बुलाए गए। उन्होंने आकर पूजा अर्चना करी और तब सिंहासन वहां से हिला।





सिंहासन को महल में लाया गया। राजा ने शुभ मुहूर्त निकलवाया और जब वे उस पर बैठने जा रहे थे, तभी एक गुड़िया जोर से हंसती हुई बोली, “राजन , रुक जाइए। क्या आपको लगता है कि आप इस सिंहासन के लायक हैं?”

राजा ने अचंभित होते हुए कहा, “क्षमा करो, मैं कुछ समझा नहीं।”

गुड़िया ने कहा, “यह सिंहासन महान राजा विक्रमादित्य का है। जो उनकी तरह महान होगा, वही इस सिंहासन पर बैठने का हकदार होगा। क्या आपको लगता है कि आपका विवेक और न्याय महाराज विक्रमादित्य की तरह है?”

राजा भोज ने कहा “मैं राजा विक्रमादित्य की महानता के बारे में जानना चाहता हूँ। मुझे उनके विषय में बताओ...”

गुड़िया फिर हंसती हुई बोली, “मैं आपको एक कहानी सुनाऊंगी। इसे सुनकर आप खुद ही निर्णय करिएगा कि राजा विक्रमादित्य कितने महान थे..” यह कहकर गुड़िया ने महाराज विक्रमादित्य की महानता की कहानी सुनानी शुरू कर दी। कहानी सुनते-सुनते राजा भोज की आंखें फैलती चली गयीं। उन्हें विश्वास हो गया कि उनका विवेक और न्याय राजा विक्रमादित्य के विवेक और न्याय से कोसों दूर है। राजा विक्रमादित्य सच में महान राजा थे।